# अजायब बानी

मासिक पत्रिका

नवम्बर-2022

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

# अजायब बानी

वर्ष–बीसवां | अंक–सातवां | नवम्बर–2022


## मेरा कागज गुनाहां वाला पाड़ दें
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से — 2

## मौत को सदा याद रखें
सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज — 7

## सवाल-जवाब
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब — 17

## समय का महत्व
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से — 31


प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम** 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)
संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** 99 50 55 66 71 80 79 08 46 01
विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04 99 28 92 53 04
उप संपादक : **नन्दनी** सहयोग : **ज्योति सरदाना, डॉ सुखराम सिंह**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 248 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

# मेरा कागज गुनाहां वाला पाड़ दे

27 सितम्बर 1985 16 पी.एस.आश्रम, राजस्थान

*मेरा, कागज गुनाहां वाला पाड़ दे, होर कुछ मंगदा नहीं x 2*

1 *तूं समरथ तूं, अंतरयामी, मैं गुनाहगार हां, नमक हरामी x 2*
*बण के, पारस लोहे नूं तार दे,*
*होर कुछ मंगदा.....*

2 *तेरी महिमा, जाण ना सकिऐ, नूर इलाही, पछाण ना सकिऐ x 2*
*तीर, दया दा कलेजे विच मार दे,*
*होर कुछ मंगदा.....*

3 *छडणा इक दिन, देश पराया, झूठी काया, झूठी माया x 2*
*बाहों, फड़ पीया कर पार दे,*
*होर कुछ मंगदा.....*

4 *असीं पापी हां, औगुणहारे, बक्शो दाता, जीव विचारे x 2*
*होमैं, हंगता दे दुखड़े निवार दे,*
*होर कुछ मंगदा.....*

5 *दया करो साथों, पाप छुड़ाओ, सिमरन भजन दा, जाप कराओ x 2*
*कृपाल जी, दुखिए 'अजायब' नूं तार दे,*
*होर कुछ मंगदा.....*

मैंने आर्मी में काम किया है, मैं आर्मी के नियमों को अच्छी तरह जानता हूँ। जब कोई आदमी आर्मी में भर्ती होता है तो उसकी शीट–रोल बनाई जाती है। शीट–रोल में उस आदमी की उम्र, उसका कद और उसका सारा विवरण दर्ज होता है। नौकरी के दौरान वह जो अच्छे काम करता है या गलतियाँ करता है वह सब शीट–रोल में दर्ज किया जाता है।

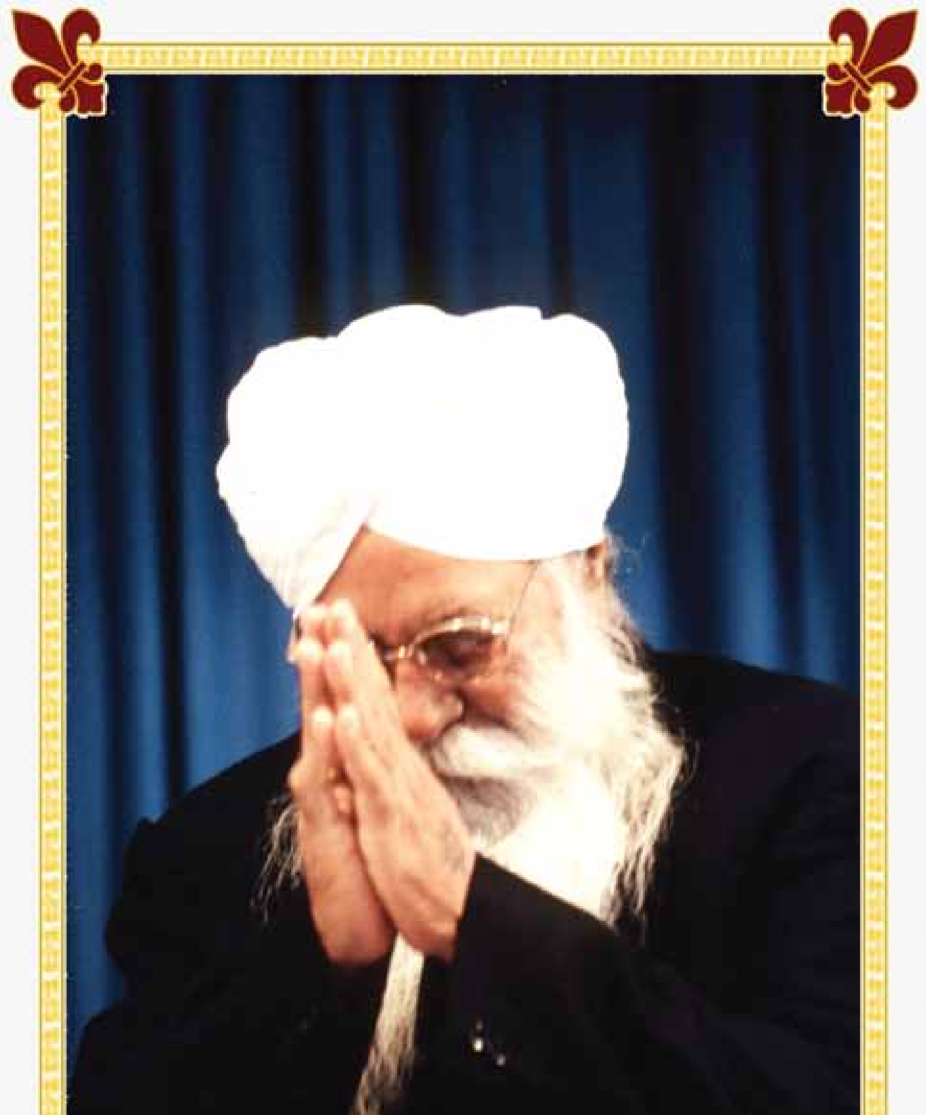
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

आर्मी में कुछ समय बाद जब उसकी तरक्की की बारी आती है, उस समय कमांडर उसकी शीट–रोल देखता है। अगर उसकी शीट–रोल में उसके कर्मों का हिसाब–किताब सही है, उसने कोई गलती नहीं की तो उसकी तरक्की की जाती है। तरक्की होने के बाद वह अपना जीवन अच्छी तरह से जीता है अगर उसने कोई गलती की है तो उसकी गलती को शीट–रोल में लाल स्याही से लिखा जाता है।

जब कमांडर शीट–रोल में उसके गलतियाँ लाल स्याही से लिखी हुई देखता है तो वह उससे कहता है, ''प्यारेया, मैं तुम्हें तरक्की तो देना चाहता हूँ लेकिन तुमने अपनी शीट–रोल खराब की हुई है इसलिए तुम्हें तरक्की नहीं मिलेगी।'' अगर उसने बिना कोई गलती–गुनाह किए हुए शीट–रोल साफ रखी होती है तो उसे तरक्की मिलती है लेकिन उसने इस तरफ कोई ध्यान नहीं दिया।

हमारी हालत भी उस इंसान जैसी है जिसने आर्मी में जाकर अपना जीवन खराब कर लिया क्योंकि उसने बुरे कर्म करके अपनी शीट–रोल खराब कर ली। हम जब से परमपिता परमात्मा से बिछुड़कर इस दुनिया में आए हैं, हमारी आत्मा पर पिछले जन्मों के अच्छे और बुरे कर्मों का बोझ है, इस दुनिया में रहकर हम अपने कर्मों के लेखे–जोखे के कारण परमात्मा से दूर हैं। जब इंसान का जन्म होता है तो धर्मराय–न्याय का देवता हर इंसान के अच्छे–बुरे कर्मों का लेखा–जोखा रखता है।

जब परमात्मा हमारे ऊपर दया करना चाहता है, हमारा जीवन अच्छा बनाना चाहता है तो वह धर्मराय के द्वारा लिखा हुआ हमारा लेखा–जोखा देखता है। अगर हमने बुरे कर्म नहीं किए, अपने जीवन को पवित्र रखा है तो परमात्मा हमें इसी जन्म में हमारे असली घर ले जाता है। अगर हमारा लेखा–जोखा साफ नहीं, हमने बुरे कर्म और गलतियों से अपने जीवन को गंदा किया हुआ है तो परमात्मा क्या करे?

मैं एक बार बैठे–बैठे उन सतसंगियों के बारे में सोच रहा था जो कई सालों से इस राह में बहुत मेहनत कर रहे हैं लेकिन उन्होंने कोई खास तरक्की नहीं की। उस समय मुझे अपने आर्मी के दिन याद आए, जब कमांडर आर्मी वालों की शीट–रोल मंगवाते थे। मुझे लगा कि सतसंगियों की हालत भी वैसी ही है। सतसंगी इस तरफ ध्यान नहीं देते, वे अपने लेखे–जोखे के कागज को गंदा करते जाते हैं इसलिए उनकी तरक्की नहीं होती और वे असली घर नहीं जा पाते।

सतगुरु, सतसंगियों पर बहुत दया करते हैं लेकिन उनकी सारी दया हमारी सफाई करने में ही खर्च हो जाती है। सतगुरु हमारी आत्मा पर बहुत दया करते हैं फिर भी हमारी आत्मा ऊपर नहीं जा पाती क्योंकि ये इस संसार में अपने पापों और बुरे कर्मों से गंदी हो गई है।

जब मैं सतसंगियों की इस तरह की हालत के बारे में सोच रहा था तब मैंने यह भजन लिखा था। यह बेचारा शिष्य क्या कर सकता है, यह सतगुरु से कुछ माँग नहीं सकता, यह नहीं जानता कि क्या अच्छा है और क्या बुरा है? इसलिए मैं परमपिता परमात्मा से विनती करता हूँ कि आप उस कागज को पाड़ दें ताकि मेरा लेखा–जोखा साफ हो जाए और आप मुझे ऊपर ले जाएं, क्योंकि शिष्य इतने बुरे कर्म करते जाते हैं कि उनका लेखा–जोखा कभी साफ नहीं होता।

शिष्य को हमेशा अपना लेखा–जोखा साफ रखने की कोशिश करनी चाहिए, उसे हमेशा याद रखना चाहिए कि गुरु परमात्मा उसे देख रहे हैं। शिष्य को ऐसा कोई काम नहीं करना चाहिए जिससे उसके लेखे–जोखे का कागज गंदा हो। उसे कोशिश करनी चाहिए कि धर्मराय उसके लेखे–जोखे वाले कागज पर लाल रंग से कुछ न लिखे। अगर हमने अपने जीवन को पवित्र रखा है तो सतगुरु हमें इसी जीवन काल में हमारे असली घर ले जाएंगे। सतगुरु एक बार हमें अपनी दया भरी नजर से देख लें तो वे हमें सफल कर देंगे और हमारी आत्मा को वापिस ले जाएंगे। ***

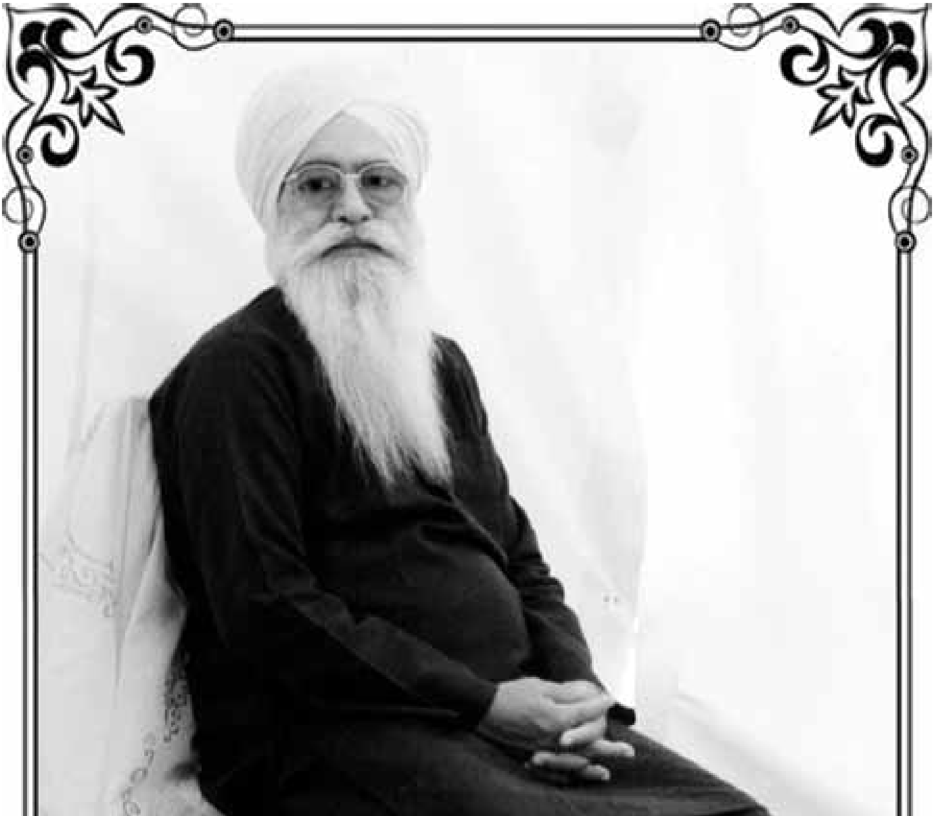

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

27 फरवरी 1988

16 पी.एस.राजस्थान

# मौत को सदा याद रखें

गुरु अर्जुनदेव जी की बानी

DVD - 537(4)

हाँ भई, हम सबको पता है, हम एक–दूसरे से कहते भी हैं कि यह जवानी, यह रूप, यह मान–बड़ाई और यह माया के रंग हमने यहीं छोड़ जाने हैं लेकिन ऐसा हम बाहर से ही कहते हैं, इस पर अमल नहीं करते। वह जीव भाग्यशाली है जिसे मौत सदा याद रहती है। इसका मतलब यह नहीं कि हम दुनिया के कारोबार छोड़ दें, हाथ पर हाथ रखकर बैठ जाएं कि जब मर ही जाना है तो क्यों कुछ करें?

सन्त हमें बताते हैं कि संसार में जितनी देर हमारी जिंदगी है उतनी देर पुरुषार्थ करना है। परमात्मा ने हमारे जिम्मे जो ड्यूटी लगाई है उसे निभाना हमारा पहला फर्ज है। मैं बताया करता हूँ कि इसी जगह परमात्मा कृपाल ने मुझसे दो–तीन बातें कही थी, जो मेरी जिंदगी का खास हिस्सा बनी हैं। वे बातें ये हैं, ''**अगर कोई आप पर अहसान करे तो उसे भूलना नहीं, अगर कोई पानी पिलाए तो उसे दूध की तरह समझना है। अगर तू किसी का फायदा कर दे तो उसे जुबान पर नहीं लाना और उससे यह आशा नहीं रखनी कि मैंने इसका फायदा किया है, यह भी मेरा फायदा करे। किसी इंसान से आशा रखना सबसे बड़ी गलती है।**''

वे अक्सर कहा करते थे, ''**मौत को सदा याद रखें**। हमें मौत याद होगी तो हम उपद्रव नहीं करेंगे, स्वाभाविक ही हमारी प्रवृति 'शब्द–नाम' की कमाई की तरफ जाएगी।'' सब सन्त जो परमात्मा से मिले हैं उन सबका यही उपदेश रहा है कि सन्तमत लेक्चरबाजी का और किताबें लिखने का नहीं, यह तजुर्बे का मत है, अपने आपको सुधारने का मत है।

पहले हिन्दुस्तान में विद्या का इतना प्रसार नहीं था, इतने कॉलेज और यूनिवर्सिटी नहीं थे, शिक्षा का एक केन्द्र काशी ही था। जो काशी से पढ़कर आता उसे अहंकार होता था कि मैं काशी पढ़ा हुआ हूँ, मुझसे कौन जीत सकता है? अगर उसे पता लग जाता कि फलानी जगह कोई पढ़ा-लिखा आदमी बैठा है तो वह उससे बहस करने के लिए चला जाता।

उस समय काशी की यूनिवर्सिटी पर एक खास जाति, पंडितो का कब्जा था वहाँ दूसरी जाति वालों को दाखिला ही नहीं मिलता था। इसी तरह चार पंडित काशी यूनिवर्सिटी पास करके आ रहे थे, रास्ते में उन्हें नारियल के पेड़ मिले। उन्होंने जिंदगी में ऐसे पेड़ नहीं देखे थे। ख्याल आया कि इन्हें तोड़ लें ये फल अच्छे होंगे। उनमें से एक पंडित पेड़ पर चढ़ा उसके पास कोई ऐसी चीज नहीं थी जिससे वह नारियल को काट लेता। नारियल का फल बहुत सख्त होता है। उस पंडित ने पेड़ पर चढ़ते हुए यह नहीं देखा कि एक साँप भी पेड़ के ऊपर चढ़ रहा था।

हिन्दुस्तान में साँप बहुत जहरीले होते हैं, अमेरिका में साँपों में जहर कम होता है। आप चाहे उनके नजदीक ही फिरते रहें वे डंक नहीं मारते। बंदा जब साँप को देखता है तो उसे कंपकंपी चढ़ जाती है कि कहीं यह मेरे ऊपर हमला न कर दे। यही हालत उस पंडित की थी। नीचे खड़े हुए पंडितो को यह चिन्ता थी कि कहीं यह साँप हमारे ऊपर न गिर जाए, वे सभी घबराए हुए थे।

वहाँ एक बुजुर्ग आया। उसने कहा, ''पंडित जी, आप लोग क्या सोच रहे हो, क्यों काँप रहे हो?'' उन्होंने कहा कि साँप पेड़ पर चढ़ रहा है, वह हमारे साथी को खा जाएगा, उसे नीचे उतारने की कोई युक्ति नहीं। अगर हम उस साँप को कोई पत्थर या डंडा मारते हैं तो साँप हमारे ऊपर गिर जाएगा हमें खा भी सकता है। उस बुजुर्ग ने पंडितों से पूछा, ''तुम लोग कितना पढ़े हुए हो?'' पंडितों ने बताया कि हम काशी पास हैं। बुजुर्ग ने

कहा कि तुम लोग पढ़ तो जरूर गए हो लेकिन तुम्हें अनुभव नहीं। अनुभव के बिना पढ़ाई किस काम की? हम ऐसा करें कि हम एक कपड़े को चारों तरफ से पकड़ लेते हैं, उस पंडित से कहें कि वह ऊपर से नीचे छलाँग लगा दे हम उसे जमीन पर गिरने नहीं देंगे, वह बच जाएगा।

अब आप सोचकर देख सकते हैं कि वे पंडित पढ़ तो जरूर गए थे लेकिन उनमें अनुभव की कमी थी। वह बुजुर्ग पढ़ा हुआ तो नहीं था लेकिन उसके पास ऐसा अनुभव था कि उसने पंडित की जान बचा दी।

आपके आगे गुरु अर्जुनदेव जी का शब्द रखा जा रहा है। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं कि जब मेरे दिल के अंदर परमात्मा से मिलने की तड़प पैदा हुई तो मैंने उसे हर जगह खोजा। जप-तप, पूजा-पाठ, तीर्थों पर जाना, जलधारे करना और धूनियाँ तपाना यह सब कुछ ही किया। वेदों के पाठ भी किए, योगियों के न्यौली कर्म आदि भी किए लेकिन इनके करने से थोड़े समय के लिए शान्ति जरुर पैदा हुई। आखिर वही खुष्की, वही काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार आए।

हम अंतिश करण में बाग लगाते हैं। जब उन्हें फूल लगते है, फल लगते हैं तो पता नहीं वे जानवर किस तरफ से आ जाते हैं और बाग उजाड़ देते हैं। जब हमें गुरु रामदास जी की शरण प्राप्त हुई तो हमने उनके आगे विनती की, ''हे महापुरुषों, आप तजुर्बेकार हैं, आप हमें अंतिश करण के बाग को आबाद करने की युक्ति बताएं ताकि हमारा भी बचाव हो। हमने इस बाग की रखवाली किस तरह करनी है?''

गुरु शिष्य का रिश्ता बहुत गहरा होता है, यह बयान में नहीं आता। अंदर गए बिना यह हमारी समझ में नहीं आता। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

***सतगुरु सिक्ख का हलत पलत सवारै***

फिर कहते हैंः

***सतगुरु सिक्ख के बंधन काटै, गुरु का सिक्ख बिकार ते हाटै।***

गुरु और शिष्य अलग–अलग शरीरों में रहते हुए जब एक ज्योत हो जाते हैं तब गुरु, शिष्य बन जाता है और शिष्य, गुरु बन जाता है। गुरु, शिष्य में बोलता है और शिष्य, गुरु में बोलता है।

***एक जोत दोय मूर्ति धन पिर कहिऐ सोय***

शिष्य, गुरु का मुख बन जाता है। शिष्य की अपनी सब इच्छाएं खत्म हो जाती हैं, उसके शरीर में जो इच्छा होती है वह गुरु की ही होती है। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

***'नानक' सतगुरु सिक्ख को जी नाल समारै***

सतगुरु, सेवक को दिल के अंदर लिख लेता है। साँस–साँस के साथ अपने शिष्य को याद रखता है कि मैंने इसकी जिम्मेदारी ली है इसे मालिक के आगे लेकर जाना है। गुरु हमेशा ही अंदर समझाता है या स्वपन के जरिए समझाता है। आमतौर पर गुरु हमें सतसंग के जरिए बहुत समझाता है कि आपके रास्ते में कौन–कौनसे काँटे हैं और आपने इन काँटो को किस तरह साफ करना है, किस तरह 'शब्द–नाम' की कमाई करनी है? यह सब कुछ वह खुद ही करता है।

हम अंदर जाकर देख लेते हैं कि गुरु, सेवक के लिए कोई कसर नहीं छोड़ता। हम काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के पंजे में फँस जाते हैं, गुरु के उपकार को नहीं समझते। हम गुरु को कभी दुनियावी तौर पर याद कर लेते हैं या कभी उसका हुक्म मान लेते हैं लेकिन जिस श्रद्धा या प्यार से गुरु हमें याद करता है, हमारा लोक–परलोक सँवारता है अगर हम उसका सौंवा या हजारवाँ हिस्सा भी कोशिश करें तो हम आसानी से अपने जीवन काल में ही देख सकते हैं कि गुरु, सेवक के लिए क्या करता है? गुरु जीवन काल में ही सेवक को परमात्मा से मिलाना चाहता है कि मैं इसकी तरफ से तो स्वतंत्र हो जाऊं।

गुरु प्योर और पवित्र बर्तन होता है। वह हमारी तरह काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार में लिप्त नहीं होता। गुरु ईर्ष्या से ऊपर उठा होता है। गुरु किसी से नफरत नहीं करता, बेशक ऐसे बर्तन परमात्मा की तरफ से बने बनाए ही आते हैं लेकिन दुनिया में आकर पूर्ण होते नजर आते हैं। वे बहुत कठिन साधना साधते हैं और दुनिया के सामने ही अपने गुरुदेव का हुक्म मानते हैं। गुरुओं ने उनके जिम्मे भजन–अभ्यास का कार्यक्रम लगाया होता है, वे इसे पूजा की तरह करते हैं। वे भजन–अभ्यास में कभी आलस नहीं करते।

गुरु अर्जुनदेव जी ने कोई सांसारिक लड़ाई नहीं लड़ी, आप बहुत शान्त स्वभाव के थे। उस वक्त आपको सन्तमत का प्रचार करने में बहुत कठिनाईयाँ आई। आपका बड़ा भाई पृथ्वीचंद आपसे काफी ईर्ष्या करता था कि गद्दी मुझे मिलनी चाहिए थी। आमतौर पर सन्तमत में लोग जायदादों के भूखे होते हैं। लोगों में ईर्ष्या होती है लेकिन जो कमाई करने वाले होते हैं, जो गुरु के भक्त बन जाते हैं उन्हें गुरु की जरुरत होती है। उनका जायदाद, गद्दी के साथ किसी प्रकार का मोह नहीं होता।

उस समय के पंडित और मुल्ला ये दोनों समाज के धार्मिक लीडर आपके खिलाफ थे क्योंकि इनकी दुकानदारी में फर्क पड़ रहा था, आपका बड़ा भाई पृथ्वीचंद भी उनके साथ मिल गया। सच के ग्राहक इनके पंजे में नहीं फँसते थे, वे गुरु अर्जुनदेव जी के पास जाकर नामदान प्राप्त करते थे। स्वामी जी महाराज कहते हैः

***पंडित भेख पेट के मारे वे संतन पर करते तान***
***हितकर सन्त उन्हें समझावे वे मानी नहीं माने आन***
***उनको चाह मान और धन की परमार्थ से खाली जान***

गुरु अर्जुनदेव जी के शब्द को गौर से सुनना है। गुरु अर्जुनदेव जी ने कठिन कमाई की। सन्त, गुरु कहलवा लेना बहुत आसान है। हम खुश

होते हैं कि लोग हमें गुरु कहते हैं लेकिन गुरु पदवी को प्राप्त करने के लिए कई जन्मों में कड़ी मेहनत करनी पड़ती है। वही साध है जो साधना करके साध बनता है, कहने से कुछ नहीं होता।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि सन्तों के पास जीवों को समझाने की बहुत युक्तियां होती हैं। सन्त किसी के ऊपर अपनी बात नहीं थोपते वे हमें प्यार से बता देते हैं, ''प्यारेयो, अगर आप इस तरह करेंगे, इस रास्ते पर चलेंगे तो आपका फायदा होगा।''

सकेत मंडी का राजा गुरु अर्जुनदेव जी के पास आया। उसे शिकार करने का बहुत शौक था लेकिन आत्मा में तड़प भी थी कि 'शब्द-नाम' मिले। वह यह भी सोचता था कि मैं शिकार करने की बुरी आदत नहीं छोड़ सकता। उसने कई बार सोचा आखिर गुरु अर्जुनदेव के पास चला गया। उसने गुरु अर्जुनदेव जी से विनती की कि मुझे आपसे शिक्षा प्राप्त करने का बहुत शौक है लेकिन मुझे शिकार खेलने की आदत है अगर आप मेरी प्रवृति को शिकार की तरफ से बदल दें तो मैं आपका शिष्य बन जाऊं।

गुरु अर्जुनदेव जी बहुत दयावान थे। उन्होंने कहा, ''राजा यह मामूली बात है अगर तू तैयार है तो हम तुझे शिकार खेलना बता देते हैं कि कौनसा शिकार खेलना है और कौनसा नहीं खेलना? कौनसा शिकार हमारे लिए फायदेमंद है और कौनसा हमें संसार के बंधनों में गिराता है, किस शिकार से हम जीवन मुक्त हो सकते हैं, कौनसा शिकार हमें बार-बार चौरासी के चक्कर में लेकर आता है।''

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''आप यह न देखें कि हम पुन्नी हैं या पापी हैं। जब गुरु की शरण में आ गए, जो कुछ पहले करते हैं उसे एक तरफ रख दें और गुरु जो रास्ता बताता है उस पर दृढ़ता, विश्वास और प्यार के साथ चलें।''

***जो मार्ग गुरु दे बताई सोई कर्म धर्म हुआ भाई।***

## दस मिरगी सहजे बंधि आनी।।

सन्त–महात्मा कभी अपनी बड़ाई नहीं करते और न ही अपनी बड़ाई सुनकर खुश होते हैं। सन्त अपने गुरुदेव को ही क्रेडिट देते हैं कि अगर गुरुदेव न मिलते, वह दया न करते तो हम भी बाकी इंसानों जैसे होते।

पाँच कर्मन्द्रियाँ और पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, ये दस हिरनियाँ हैं। जिस तरह हिरन तेज छलाँगे लगाता है इन्द्रियों की भी यही हालत है। ये हमारे परमार्थ का बाग उजाड़ रही थी, ये सारे फल–फूल खा जाती थी। हमने इन पर सतगुरु के 'शब्द–नाम' के जरिए काबू पाया। गुरुओं ने हमें अंदर का जो राग सुनाया, वह सुनाने से ये सहज ही काबू में आ गई।

## पाँच मिरग बेधे सिव की बानी।।

जब हमने इन इन्द्रियों को काबू किया तो पाँचो बड़े डाकु–काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार उनकी मदद के लिए आए। हमनें उन्हें भी 'शब्द–नाम' से ही काबू किया।

## संतसंगि ले चड़िओ सिकार।। मृग पकरे बिनु घोर हथीआर।।

अब आप कहते हैं कि मुझमें तो ताकत नहीं थी कि मैं इन हिरनों को काबू में कर लेता। मैं गुरु रामदास जी की संगत करके, उन्हें साथ लेकर शिकार करने लगा। बड़े–बड़े वलि, पैगम्बरों से ये हिरन काबू नहीं आते थे, इन्होंने बड़े–बड़े आलिम–फाजिलों की गर्दन झुका दी। मैंने बिना किसी दुनियावी हथियार के इन्हें पकड़ लिया, मुझे किसी और घोड़े की जरूरत ही नहीं पड़ी।

## आखेर बिरति बाहरि आइिओ धाइ।। अहेरा पाइिओ घर कै गाँइ।।

आप कहते हैं कि शिकार करने वाले लोगों ने भी प्रवृति बनाई होती है, उन्होंने अपना स्वभाव सख्त बनाया होता है लेकिन हमने इसमें प्यार, विरह वाला, शान्त स्वभाव बनाना है। मैं जब गुरु रामदास जी के पास गया

तो उन्होंने कहा कि ये पाँचों डाकु तेरे बाग को उजाड़ रहे हैं। तू अपनी बाहरमुखी प्रवृति को अंतरमुखी कर, 'शब्द–नाम' की कमाई कर।

मैं जलधारा के बारे में बताया करता हूँ कि यह दिसम्बर–जनवरी के महीने में किया जाता है, इन महीनों में बहुत सर्दी होती है। उस वक्त एक घड़े से शुरु करके सौ घड़े तक बिना किसी आसरे के खुली जगह में बैठ जाना होता है। सिर की चोटी में पाँच–छह घंटे पानी की एक पतली धार डाली जाती हैं। आम लोगों के दिल में ख्याल होता है कि इससे परमात्मा मिल जाएगा, यह दुनिया में वाह–वाह ही है। यह सब मैंने खुद किया है।

इसी तरह मई–जून के गर्म महीने में दोपहर के बारह बजे से धूनियाँ तपानी शुरु की जाती है। इंसान ने कपड़े उतारे होते हैं, वह सिर से भी नंगा होता है। चारों तरफ धूनियाँ जलाकर बीच में बैठ जाता है, इसमें भी चार–पाँच घंटे लग जाते हैं। कोई दस हजार राम अक्षर का जाप करता है तो कोई इससे भी ज्यादा करता है। यह अपनी–अपनी इच्छा के मुताबिक होता है। मैंने भी यह कर्म बहुत श्रद्धा और प्यार से किए हैं।

मैं जब बाबा बिशनदास जी के पास आया तो उन्होंने कहा, ''तेरे अंदर पहले ही पाँच डाकुओं की आग जल रही है, शरीर जलाने से क्या फायदा?'' मैं जब आर्मी में था उस समय जवान था। मैंने गर्मी–सर्दी का मुकाबला किया है, काफी गर्म–सर्द इलाकों में भी रहा हूँ। इसी तरह एक बार मैं बाबा सावन सिंह जी के सतसंग में कुछ फौजी जवानों को लेकर गया। वहाँ कोई मेरे जूते उठाकर ले गया। बाबा सावन सिंह जी ने सतसंग में कहा कि सतसंग में अनेक प्रकार के जीव आते हैं कोई जूते उठाने आता है, कोई सन्तों के दर्शन करने आता है तो कोई सतसंग सुनने आता है लेकिन सन्त सबके साथ प्यार करते हैं किसी पर अभाव नहीं लाते।

मैंने यह बात अपने साथियों को भी नहीं बताई कि ये नये आदमी हैं सोचेंगे कि हम कैसे सन्तों के पास आए यहाँ तो लोग जूते उठाकर ले जाते

हैं। आखिर दिल में ख्याल आया कि मैंने यह साल इन जूतों से काटना था, इस घाटे को पूरा करने के लिए साल भर जूती न ली जाए। मैंने अपनी जिंदगी में अपने ऊपर कम से कम खर्च किया है।

यह ब्यास स्टेशन की बात है। मुझे एक भगवे कपड़ों वाला साधु मिला, उसने बताया कि मेरे गुरु ने मुझसे कहा था कि बारह साल नंगे पैर रहना है, जूती नहीं पहननी। उसे जहाँ जाना होता वह आमतौर पर सुबह जल्दी ही चला जाता। एक दिन वह दोपहर के समय जा रहा था, मैंने उसकी बाँह पकड़कर कहा देख भई बाबा, तुझे तो बारह साल हो गए हैं, तूने जूती नहीं पहनी लेकिन मुझे बहुत कम समय हुआ है, अब पता लगेगा कि तुम्हारा तप ठीक है या मेरा तप ठीक है? वह साधु अपनी बाँह छुड़ाने की काफी कोशिश करता रहा आखिर उसने रोकर मुझसे अपनी जान छुड़वाई।

प्यार में न गर्मी लगती है न सर्दी लगती है लेकिन परमात्मा को प्राप्त करने में ये कोई भी साधन कारगर नहीं। परमात्मा को हम तभी प्राप्त कर सकते हैं अगर हम सन्तों की सोहबत–संगत में जाएं। उनके दिए हुए नाम की कमाई प्रेम–प्यार और ईमानदारी से करें।

**मृग पकरे घरि आणे हाटि।। चुख चुख ले गए बाँढे बाटि।।**
**एहु अहेरा कीनो दानु।। नानक कै घरि केवल नामु।।**

मैंने गुरु की दया से इन हिरनों को पकड़कर उनके टुकड़े–टुकड़े करके सतसंगियों को बाँट दिए। हम कई बार जीते जी शिकारों को पकड़ लेते हैं, जिस तरह सपेरों के पास युक्ति होती है वे जीवित साँप को पूँछ से पकड़ लेते हैं और साँप के जहर वाले दाँत निकालकर साँप को टोकरी में डाल लेते हैं। बाजारों में उस साँप से रोजगार के धंधे का काम लेते हैं।

इसी तरह सन्त–महात्मा हमसे यह नहीं कहते कि आप काम इन्द्री को निकाल दें इससे छुटकारा पा लेंगे। आपको परमात्मा ने ये हथियार दिए हैं आप इनके सेवक न बन जाएं।

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं कि मुझे यह दान गुरु रामदास जी ने दिया। अब मैंने काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार पर काबू पा लिया है। काम–शील को बाँट दिया, काम चला गया अंदर शील आ गया। क्रोध–क्षमा को दे दिया, क्रोध की जगह क्षमा ने ले ली। लोभ की जगह संतोष ने ले ली है और अहंकार की जगह विवेक बुद्धि आ गई है। अंदर से गुमराह करने वाली विरोधी ताकतें निकल गई। दयालु ताकतें, मन को शान्ति देने वाली ताकतें मेरे अंदर पैदा हो गई है। ✻✻✻

# सवाल-जवाब

24 नवम्बर 1985

***एक प्रेमी**: जब हम अभ्यास करते हैं तो हमें ध्यान आँखों के पीछे, बीच में या आँखों के ऊपर लगाना चाहिए?*

**बाबा जी**: न ज्यादा ऊपर न ज्यादा नीचे, ध्यान आँखों के बीच में टिकाना चाहिए।

***एक प्रेमी**: हमने आपसे सुना है कि महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''धुनकार माथे के बिल्कुल बीच में से आती रहती है।'' लेकिन मैं जब आवाज सुनता हूँ तो मुझे आवाज दाँई तरफ से सुनाई देती है। दूसरी बात यह है कि जब हम धुन सुनने के लिए बैठते हैं तो हमारा ध्यान कहाँ टिका होना चाहिए?*

**बाबा जी**: हमें बाहर की आवाजें सुनने की आदत पड़ी हुई है इसलिए हमें लगता है कि आवाज बाहर से आ रही है लेकिन धीरे-धीरे बाहर की आदत हटकर अंदर लग जाएगी। तब पता लगेगा कि आवाज अंदर से माथे में से आ रही है। जिस तरह सिमरन के समय ध्यान तीसरे तिल पर लगा होता है वैसे ही लगा रहना चाहिए।

***एक प्रेमी**: अगर कोई कुछ न देखे तो क्या होता है?*

**बाबा जी**: अंधेरा होता है लेकिन अंधेरे में ही देखो प्रकाश हो जाएगा।

***एक प्रेमी**: आवाज सुनते हुए सिमरन क्यों नहीं दोहराना चाहिए?*

**बाबा जी**: हमें जुबान से सिमरन करने की आदत पड़ी हुई है लेकिन जब जुबान की आदत हट जाती है जिस तरह दुनिया के ख्याल अपने आप ही आते रहते हैं फिर हमें न यह पता लगता है कि हम सिमरन करने से हटे हैं, न यह पता लगता है कि हम सिमरन कर रहे हैं।

***एक प्रेमी**: हम आपसे प्रार्थना करते हैं और भी कई लोगों की यह प्रार्थना है कि आप हमें दर्शनों के बारे में कुछ बताएं?*

**बाबा जी**: दर्शन बहुत अच्छी चीज है। जो सन्तों के दर्शन प्रेम से करता है उसके सब पाप खत्म हो जाते हैं। सन्तों के दर्शन भजन से भी ऊँचे होते हैं। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

***दर्शन करत पिंड सुध भूली***

अपने गुरु के दर्शन करके मुझे अपने शरीर की सुध नहीं रहती। स्वामी जी महाराज के तीन सेवक बीबी बुक्को, सिब्बो और सालीग्राम इतने प्रेमी थे कि ये प्रेमी, स्वामी जी के दर्शन किए बिना खाना नहीं खाते थे। स्वामी जी महाराज ने इन तीनों को नामदान देने का हुक्म दिया था। बीबी सिब्बो एक दिन अपने घर में नहा रही थी। एक योगी ने आकर सतगुरु प्यार का भजन बोला तो बीबी सिब्बो को कोई सुध नहीं रही, वह भागकर आई और योगी के चरणों में गिर गई हाँलाकि वह योगी नहीं भिखारी था। उस योगी ने कहा, ''तू कपड़े तो पहन।'' बीबी सिब्बो आमतौर पर स्वामी जी महाराज के पैरों का अगूँठा चूमती थी और कहा करती थी, ''मुझे इसमें अमृत की तरह का स्वाद आता है।'' स्वामी जी महाराज के परिवार ने उन तीनों का काफी विरोध किया था।

वहाँ एक योगी तावीज किया करता था, उसके तावीज–तागों में भी फर्क पड़ने लगा क्योंकि जो स्वामी जी का सेवक हो जाता था वह इन पाखंड और यंत्रों–मंत्रो को नहीं मानता था। उस योगी का आगरा शहर के मालिक से अच्छा मेलमिलाप था, उसने मौके का फायदा उठाकर स्वामी जी के घर जितने भी सतसंगी आते थे उन सबको बंद कर दिया और बाहर पुलिस का पहरा बिठा दिया।

स्वामी जी महाराज ने हुक्म दे दिया कि कोई भी आदमी मेरे दर्शनों के लिए नहीं आ सकता। बीबी सिब्बो, सुक्को और सालीग्राम दर्शन किए बिना

खाना नहीं खाते थे। स्वामी जी का घर एक बहुत ही तंग गली में छोटा सा मकान था। एक दिन दोपहर के समय हुजूर सालीग्राम छिपते–छिपाते स्वामी जी के घर तक पहुँच गए कि जब स्वामी जी आँगन में निकलेंगे तो मैं दर्शन लूँगा। पता नहीं वह कितना समय वहाँ पर छिपा रहा। स्वामी जी महाराज लकड़ी की खड़ाव पहनते थे। स्वामी जी आँगन में निकले तो सालीग्राम अपनी आदत के मुताबिक बाँह उठाकर दर्शन करने लगा।

स्वामी जी की नजर सालीग्राम पर पड़ी तो स्वामी जी ने अपने पैरों में से खड़ाव निकालकर सालीग्राम की तरफ फैंकी, वह खड़ाव उसको जोर से लगी और खून बहने लगा। सालीग्राम ने गुस्सा नहीं मनाया बल्कि स्वामी जी के पैरों में गिर पड़ा और कहा, ''यह सब आपका ही खेल है, हम आपके दर्शन किए बिना जी नहीं सकते।'' स्वामी जी महाराज भी सालीग्राम पर इतने आशिक थे कि स्वामी जी भी कहा करते थे, ''मुझे पता नहीं कि मैं सालीग्राम हूँ या स्वामी हूँ।''

सालीग्राम उत्तर प्रदेश का जनरल पोस्टमास्टर था। वह रोजाना यमुना से पानी की गागर लाकर स्वामी जी को स्नान करवाता था। जब कुछ लोगों ने सालीग्राम की विरोधता की कि जब यह जाता है तो इसे पकड़ लें। सालीग्राम ने अफसरी की परवाह नहीं की, लोकलाज छोड़कर अपने पैरों में झाँजर बाँध ली ताकि लोगों को पता लग जाए कि सालीग्राम यमुना से पानी की गागर लेने के लिए जा रहा है।

बाबा जयमल सिंह जी आर्मी में नौकरी करते थे, वे अपनी गैरहाजिरी की परवाह नहीं करते थे। वे जब स्वामी जी महाराज के दर्शन के लिए जाते तो उस वक्त स्वामी जी उनकी ऐसी लाज रखते कि उनकी हाजिरी लगा देते थे। इसी तरह महाराज सावन सिंह जी ने कभी भी घर में छुट्टी नहीं काटी थी। उनको जब भी आर्मी से छुट्टी मिलती तो वे सीधे बाबा जयमल सिंह जी के पास जाते थे। उनको जब तनख्वाह मिलती तो वे अपनी सारी

तनख्वाह बाबा जयमल सिंह जी के आगे रख देते थे। बाबा जयमल सिंह जी जितना चाहते सावन सिंह जी के घर खर्च के लिए दे देते थे। इसी तरह महाराज कृपाल को जब भी छुट्टी मिलती वे फौरन लाहौर से डेरा ब्यास महाराज सावन सिंह जी के दर्शनों के लिए जाते। महाराज कृपाल कहा करते थे, ''मैं जब महाराज सावन सिंह जी के दर्शनों के लिए जाता था तो उस समय आधा पागल होता था।''

अगस्त के महीने में पंजाब में बहुत गर्मी होती है। हुजूर कृपाल ने मुझे यह बात बताई थी कि एक बार सावन सिंह जी खाना खाकर चौबारे में आराम कर रहे थे, मैं अपने जूते नीचे उतार कर ऊपर गया। मुझमें हिम्मत नहीं पड़ी कि मैं उनके आराम में फर्क डालूँ। महाराज जी सारा दिन बाहर नहीं निकले और मैं नंगे पैर बाहर ही खड़ा रहा। महाराज सावन सिंह जी शाम को पाँच–छह बजे बाहर निकले तो मैंने उनके दर्शन किए।

मेरे साथ मेरे सतगुरु ने इतना प्यार किया जैसे चालीस दिन के बच्चे के साथ करते हैं। वे मुझे गले लगाते और अपनी गोदी में बिठा लेते। मैं भी उनकी गोद में बैठकर अपने आपको चालीस दिन के बच्चे जैसा ही समझता था। प्यारे कृपाल ने नामदान देने से पहले भी मुझे कभी नीचे नहीं बैठने दिया था, वे मुझे अपने बराबर बिठाया करते थे।

एक दिन मैंने हुजूर कृपाल के आगे विनती की कि सच्चे पातशाह, नजारा तो लोग ले जाते हैं, मैं तो आपके बराबर बैठा रह जाता हूँ। हुजूर ने कहा कोई बात नहीं। मैंने विनती की कि आप सतसंग करते–करते मेरी तरफ जरूर झाँका करें। अगर हुजूर मेरी तरफ नहीं देखते तो मैं उनकी बाँह पकड़कर कहता कि आप मेरी तरफ देखें। उस समय हुजूर हँस पड़ते और मेरे ऊपर बहुत दया करते। मैं आमतौर पर कहा करता थाः

***अक्सर सोहणे होण जगत विच, ऐहदी शक्ल न्यारी है***

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज

दुनिया में सुंदर तो बहुत होंगे लेकिन मेरे गुरु जैसा कोई सुंदर नहीं। मैं यह भी कहताः

*मेरे कृपाल दा कोई स्वरूप देखे हो जाए हूर परंदरी*

अगर कोई मेरे कृपाल का स्वरूप देख ले तो वह हूरों की तरफ भी न झाँके। गुरु नानकदेव जी भी कहते हैंः

*जो सुख दरसन पेखते पिआरे, मुख ते कहण न जाइ*

दर्शनों से जो सुख मिलता है वह हम मुँह से नहीं कह सकते। हजरत बाहू अपनी बानी में लिखते हैः

*ऐह तन मेरा चश्मा होवे, मैं मुर्शिद देख न रज्जा हू*
*लूं लूं दे मुख लख लख चश्मे, इक खोलां इक कज्जां हू*
*इतना ड्ठिया सब्र न आवे, मैं होर किसे वल्ल भज्जा हू*
*मुर्शिद दा दीदार बाहू, मैंनू लक्ख करोड़ा हज्जा हू*

आँख से इतनी लज्जत नहीं आती। शरीर के जितने रोम हैं इतनी आँखें हो जाएं कि मैं एक आँख खोल लूं और एक आँख में उसे छिपा लूं। इतनी आँखें होने के बाद भी सब्र नहीं, किसी तरफ भागकर दर्शन कर लूं। दर्शनों की महिमा कैसे बयान कर सकते हैं? सन्तों के लिए दूर या नजदीक का कोई फर्क नहीं पड़ता। जो सन्तों को प्यार से याद करते हैं, वे उन्हीं के पास होते हैं। कबीर साहब कहते हैंः

*लाख कोस पर गुरु बसे, दीजे सुरत पठाए*
*शब्द स्वरूप पर सवार होय छिन आए छिन जाए*

अगर गुरु लाख कोस पर भी बसता है तो आप सुरत को उनके साथ जोड़ दें और आत्मा को शब्द पर सवार करके उनके देश पहुँच जाएं। आप जब भी आँखें बंद करें आप उनके पास हैं और आप जब भी आँखें खोलें तो अपने घर पर हैं।

अगर हम गुरु को याद नहीं करते चाहे वह हमारे आँगन में भी क्यों न बसता हो फिर भी ऐसा लगता है कि वह समुंद्रो से भी दूर है।

***भक्त सनेही अँगने जान समुंद्रो पार***

सतसंगियों को आपस में प्यार की बहुत जरूरत होती है। काल का सतसंगियों पर और तो कोई जोर नहीं चलता लेकिन वह हमारा आपस का प्यार दूर कर देता है। हम कुछ समय के लिए ही काल के जाल में हैं क्योंकि हुजूर दया करके हमें अपने घर ले जाएंगे। वह प्यार की दुनिया है, वहाँ मन नहीं। हम वहाँ बैठकर याद किया करेंगे कि एक ऐसा भी राज्य था जहाँ हम गए और एक–दूसरे के साथ दुश्मनी करते रहे।

***एक प्रेमी****: महाराज जी, महाराज कृपाल अक्सर कहा करते थे कि जिन लोगों को गुरु प्राप्त हुआ है वे लोग निगुरे आदमियों से कई दर्जे बेहतर हैं क्योंकि गुरु वाले रूहानियत का फायदा उठाते हैं और दुनियादारी में भी उनको काफी फायदा होता है। ऐसा देखा गया है कि कई सतसंगियों की न तो दुनियावी हालत ठीक है न वे रूहानियत के अंदर ही कहीं पहुँचे हैं। आप हमें समझाएं गुरु वाले का दुनियादारी के मामले में क्या फायदा है?*

**बाबा जी**: हाँ भई, सब सन्तों ने यही बताया है कि निगुरे का दर्शन ठीक नहीं। हिन्दु शास्त्रों में भी निगुरे के हाथ का पानी शराब के समान बताया गया है। कबीर साहब कहते हैं:

***इक निगुरा न मिले पापी मिले हजार***
***इक निगुरे की पीठ पर लख पापां दा भार***

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं:

***ज्यों निगुरा सिमरन करे, दिन में कई इक बार***
***वेश्या सति होना चाहे, तो कौन करे परतार***

***गुरु बिन माला फेरते गुरु बिन दिन्दे दान***
***गुरु बिन दान हराम है जाय पुच्छो वेद पुराण***

हमारे परमपिता कृपाल और सब सन्त यही संदेश दे रहे हैं। अब आप सवाल की असलियत की तरफ आएं। जिन्हें गुरु मिल जाता है उनकी

दुनियादारी भी बन जाती है और परमार्थ भी बन जाता है। वे सतसंगी कामयाब होते हैं उनमें भरोसा, प्यार, उद्यम कमाल का होता है। कुछ सतसंगी ऐसे भी होते हैं जिनकी न दुनियादारी बनती है और न परमार्थ ही बनता है। वे सतसंगी कामयाब नहीं होते क्योंकि उनके अंदर कई किस्म की कमियाँ होती हैं, वे उन कमियों को दूर नहीं करना चाहते। वे आलसी और दरिद्री होते हैं। गुरु जो कहते हैं उसके ऊपर उन्हें ऐतबार नहीं होता और न ही वे गुरु के कहे अनुसार चलते हैं।

महाराज कृपाल कहा करते थे कि कई आदमी देखा–देखी सतसंगी बन जाते हैं। कई आदमी दिल में प्यार–मौहब्बत से सतसंगी बनते हैं। कई आदमी मान–बड़ाई प्राप्त करने के लिए सतसंगी बनते हैं। कई आदमी देखते हैं कि इसने जब से नाम लिया है इसकी आर्थिक हालत अच्छी हो गई है और लोग इसकी बड़ाई करते हैं, मैं भी सतसंगी बन जाऊँ लेकिन वह उस सतसंगी की तरह गुण धारण नहीं करते।

कबीर साहब गरीब परिवार में पैदा हुए थे, नाम के प्रताप की वजह से कई राजा–महाराजा उनके सेवक बने। उनके पड़ोसी को जलन हुई कि जो भी आता है वह धन्य कबीर–धन्य कबीर कहता जाता है। इसके पास ऐसा कौनसा जादू है? जिस वजह से लोग इसको इतना अच्छा समझते हैं जबकि इसके पास खाने के लिए रोटी नहीं, कई बार लोगों को चने चबाकर ही सोना पड़ता है। यह अपने पास आए हुए लोगों को सोने के लिए खाट भी नहीं देता, उन लोगों को जमीन पर ही सोना पड़ता है।

एक दिन उस पड़ोसी ने कबीर साहब के पास आकर सवाल किया कि मुझे एक चीज बहुत परेशान करती है कि लोग आपको धन्य कबीर–धन्य कबीर क्यों कहते हैं? आपके पास मुझसे ज्यादा धन नहीं, मेरे पास सब कुछ है लेकिन मैं बैचेन रहता हूँ। मुझे और मेरे परिवार को शान्ति नहीं।

कबीर साहब ने उससे कहा कि भाई, मेरे पास जो मंत्र है वह मैं तुझे बता देता हूँ। कबीर साहब की सेवादार माता लोई थी, उनका घर में आपस में बहुत प्यार था। जब कबीर साहब घर आए तो माता लोई खड़ी हो गई और उसने हाथ जोड़कर कहा, ''आओ जी, आज तो बहुत अच्छा दिन है प्रकाश हो गया है आपको देखकर दिल गद्गद् हो गया।''

कबीर साहब ने माता लोई से कहा यहाँ से काफी दूर एक जोहड़ है, वहाँ से मिट्टी लेकर आ। उस मिट्टी को बारीक गूथकर उसका दीपक बनाकर उसे घी से भरकर उसी जोहड़ में जाकर जला आना। लोई शब्द भी बोलती जाती है, मिट्टी लेकर आती है, मिट्टी को घी से गूथकर उसमें घी डालकर दीपक को उसी जोहड़ में जला आती है। लोई आकर फिर विनती करती है, ''स्वामी जी, अब और क्या हुक्म है?'' कबीर साहब ने कहा, ''अब भजन–सिमरन करें।''

कबीर साहब ने उस पड़ोसी से कहा कि हमारे पास तो यही कुछ है। अब यह देखने में तो बहुत छोटी सी बात थी। उस पड़ोसी ने कहा कि यह कौनसा मुश्किल है मैं अभी जाकर कर लेता हूँ। जब वह पड़ोसी घर गया तो उसकी घरवाली उससे लड़ने लगी, ''तू कहाँ से धक्के खाकर आ रहा है, तुझे सारा दिन घर की होश नहीं, कभी कहीं तो कभी कहीं फिरता है।'' राजस्थान की कहावत हैः

***जह घर कलह कलेश वसे, तह घर घड़यो पानी नसे***

जिस घर में खटपटी रहती है उस घर के घड़ो में पानी भी सूख जाता है। उस पड़ोसी ने अपनी घरवाली से कहा, ''तू फलाने जोहड़ पर जाकर वहाँ से मिट्टी लेकर आ।'' घरवाली ने कहा, ''तू मेरे ऊपर हुक्म चलाता है तू खुद जाकर मिट्टी ले आ।'' पड़ोसी ने अपनी घरवाली को पकड़कर दो–चार थप्पड़ लगा दिए। उस बेचारी को जाना पड़ा, वह रास्ते में गालियाँ निकालती जा रही है। उसने घर आकर मिट्टी की टोकरी उसके पैरों में

फैंककर कहा कि इसे अपने सिर में मार ले। उसने फिर अपनी घरवाली से कहा कि तू इस मिट्टी को बारीक गूथकर उसका दीपक बनाकर, उसे घी से भरकर उसी जोहड़ में जाकर जला आ।

उसकी घरवाली ने शोर मचा दिया कि लोगों मुझे आकर बचाओ, मेरे पति को भूत चिपक गया है, यह तो पागल हो गया है। शोर मचाने से पड़ोसी आ गए। जब पड़ोसी आए तो उस आदमी ने शर्म के मारे दाँत भींच लिए। पड़ोस वाले किसी मौलवी को बुलाकर लाए कि इस पर भूत की छाया है। शोर सुनकर कबीर साहब भी आ गए, कबीर साहब को सारी कहानी का पता था। कबीर साहब ने मौलवी से कहा आप सब लोग चले जाएं, यह तो हमारा मामला है; हम इस भूत को अंदर से निकाल देंगे।

कबीर साहब ने उस पड़ोसी से कहा कि देख भई, पहले अपने–आप कुछ करना पड़ता है फिर ही परिवार ठीक होता है। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जिसने अपने घर को सुधारना है, वह पहले आप सुधरे।'' हमने गुरमत पर चलना है, हमें अपने कर्मों के ऊपर निर्भर रहना चाहिए। जिंदगी में फायदे–नुकसान दोनों ही होते रहते हैं।

***एक प्रेमी***: *महाराज जी, आपके भजन* ***तेरे प्रेम बावरी कीता हुण कोई पेश ना जांदी ऐ, जेहड़ा प्रेम कमौंणा चाहवे पहलां सिर नू भेंट चढ़ावे*** *क्या आप हमें इस बारे में समझाएंगे?*

**बाबा जी**: हाँ भई, सब सन्तों ने प्रेमियों को यही संदेश दिया है। गुरु नानकदेव जी ने भी कहा है:

***जे तू प्रेम खेलण का चाव सिर धर तली गली मेरी आओ***
***इत मारग पैर धरीजै सिर दीजे कांण न कीजै***

मुसलमान फकीरों ने इसे उस्तरे की धार पर चलने के बराबर कहा है। सिक्ख गुरुओं ने गुरुमत को खंडे की धार पर चलने के बराबर कहा है। आमतौर पर बहुत से आदमी आशा रखकर भक्ति करते हैं, कोई कहता

है कि मेरा बच्चा राजी हो जाए। कोई कहता है कि मैं इम्तिहान में पास हो जाऊं। कोई कहता है कि मेरी औलाद नेक बने। कोई कहता है कि मेरे पास ज्यादा धन–पदार्थ आ जाए। आप सोचकर देखें, क्या वह गुरु की भक्ति कर रहा है या सामान की भक्ति कर रहा है, क्या ऐसे आदमी उस्तरे की धार पर चल सकते हैं? एक महात्मा ने कहा हैः

***कोई दुध मँगे  कोई पुत मँगे आशिक मंगदा नित दीदार तेरा***

आशिक गुरु के भक्त होते हैं वे गुरु से गुरु को ही माँगते हैं। महाराज कृपाल सिंह अपनी रिहाइश के लिए जमीन देखने के लिए देहरादून की तरफ गए। उनके प्यारे गुरु महाराज सावन सिंह जी को पता लगा कि यह जमीन देख रहा है तो उन्होंने अपनी गद्दी की तरफ हाथ करके कहा, ''देख भई कृपाल सिंह, मैंने तुझे यह जमीन देनी है, तुझे कोई और जगह तलाश करने की क्या जरूरत है?''

महाराज सावन सिंह जी के जाने के बाद इस तरह के हालात हुए कि महाराज कृपाल को डेरा ब्यास में अपना बनाया हुआ मकान भी छोड़ना पड़ा किसी की विरोधता नहीं की, किसी को गुस्सा नहीं दिखाया कि गद्दी पर मेरा हक है, मैंने बैठना है। बल्कि अपना बना हुआ मकान भी छोड़ आए। आप सोच सकते हैं अगर हमारे साथ ऐसा हो तो क्या हम सब्र का प्याला पी सकते हैं?

महाराज कृपाल के चोला छोड़ने के समय कितनी ही पार्टियां बनी लेकिन वे इस गरीब अजायब को देने के लिए तीन सौ मील चलकर आए। जब उन्होंने मुझसे यह कहा, ''तू दिल्ली चलकर आश्रम संभाल।'' मैंने कहा, ''मैं सारी जिंदगी आपकी याद में बैठा रहा, आज जब आप मिले हैं तो मुझे ईंट और पत्थर बख्श रहे हैं, क्या मैंने ये ईंटे सिर में मारनी हैं? मुझे तो आप चाहिए।'' मुझे बहुत से लोगों ने पार्टियों में खींचना चाहा लेकिन मैं वहाँ नहीं गया। मैंने छह महीने तक किसी को पता ही नहीं लगने

दिया कि मैं कहाँ हूँ? आप देख सकते हैं अगर हमारे साथ ऐसी बीते तो क्या हम सब्र कर सकते हैं?

मैं बताया करता हूँ कि मेरे पिछले गाँव में पचास–पचास मील तक इतना बड़ा मकान नहीं था, जितना बड़ा मकान मैंने बनाया हुआ था, उसमें पचास बीघा जमीन थी। महाराज कृपाल ने तीसरी मंजिल पर चढ़कर सब कुछ देखा और कहा, ''मैं तेरा मकान, तेरी जायदाद देखकर खुश हूँ।'' लेकिन मेरे खड़े–खड़े ही यह मकान छोड़ दे, पशु लोगों की लड़कियों को दे दे और बर्तन लोगों को बाँट दे।''

अब आप सोच सकते हैं अगर गुरु किसी का घर लुटाए तो क्या शिष्य यह सहन कर सकता है? अगर हमारे ऊपर ऐसा कोई इम्तिहान आ जाए क्या हम इसे पूरा कर देंगे, क्या यह सिर देने से कम है? उनके हुक्म के मुताबिक ही मैंने यहाँ 16 पी.एस. में आकर अपना अभ्यास शुरु किया था।

इसी तरह भक्त नामदेव जी बहुत गरीबी की हालत से गुजर रहे थे, वह शालें रंगकर अपना गुजारा करते थे। कई बार उन्होंने बाहर जाकर भजन पर बैठ जाना, कपड़े न बेचकर आने पर घरवाले कलेश करते। एक दिन उनकी पत्नी ने कहा कि आप काम क्यों नहीं करते, बच्चे क्या खाएंगे? उन्होंने घरवालों को बहुत समझाया कि जो आदमी गुरु का हो जाता है उसका सब कुछ गुरु ही करता है। नामदेव जी अंदर जाते थे वे इस राज को समझते थे। उनकी पत्नी ने कहा चाहे आप कपड़े उधार ही दे आएं। नामदेव जी ने कहा अगर उधार देने है तो मैं अभी दे आऊंगा।

भक्त नामदेव जी ने कपड़ों की गठड़ी उठाई, बाहर जाकर कपड़े पत्थरों पर रख दिए और एक छोटा सा पत्थर उठाकर ले आए। आपने कहा कि मैं कपड़े उधार दे आया हूँ। पत्नी ने कहा कोई लिखत–पढ़त भी की है? नामदेव जी ने कहा, ''मैं अपने साथ जामन ले आया हूँ, सात दिन का इकरार किया है।'' भक्त नामदेव जी ने ख्याल किया कि अब ये

सात दिन तो मुझे परेशान नहीं करेगी। वे अंदर अपने गुरुदेव के साथ जुड़े और बाहर अपनी क्रियाओं के लिए ही आए।

जो आदमी अंदर अपने गुरु के पास जाता है उसका गुरु बेइंसाफ नहीं, गुरु को पता है कि इसे किस चीज की जरूरत है? नामदेव जी जब सात दिन तक बाहर नहीं निकले तो पत्नी ने कहा, ''आप जामन वाले के पास जाकर पैसे ले आएं।'' नामदेव जी ने कहा, ''जामन मेरे पास ही है।'' वे जब पत्थर अपनी पत्नी को देने लगे तो वह सोने में बदल चुका था। नामदेव जी ने कहा, ''तुम्हारे कपड़े जितने के थे वह रख लो बाकी रहने दो।'' आपको पता ही है कि दुनियादार कैसे सब्र कर सकते हैं? आप भक्तों का सब्र देख सकते हैं, इसे ही खंडे की धार कहा है।

बाबा जयमल सिंह जी घुमाणा गाँव में पैदा हुए, भक्त नामदेव जी ने अपनी जिंदगी का काफी हिस्सा घुमाणा गाँव में ही बिताया। नामदेव जी के गुरु ने एक मिस्त्री का रूप धारण करके उनका घर भी बनाया था। जब नामदेव जी का घर अच्छा बना तो पड़ोसन पूछने लगी आपने यह मकान किससे बनवाया है? मैं उस मिस्त्री को आपसे दुगनी मजदूरी दे दूँगीः

***पाड़ पड़ोसण पूछ ले नामा का पहि छान छवाई***
***तो पहि दुगणी मजूरी देहू मोको बेढी देंहु बताई हो***

नामदेव जी ने कहाः

***बेढी प्रीत मजूरी माँगै जे को छान छवावै हो***
***लोग कुटुम्ब सबे ते तोरै तो आपन बेढी आवै हो***

नामदेव जी ने कहा कि वह और कोई मजदूरी नहीं माँगता सिर्फ प्यार ही माँगता है। बस! लोगों के साथ तोड़ देता है, कुटुम्ब से भी अलग कर देता है फिर वह बिना बुलाए ही घर आ जाता है।

मैंने जितने भी भजन लिखे हैं वे किसी मान–बड़ाई की वजह से नहीं लिखे, ज्यादा बुद्धिमानी करके नहीं लिखे। मैंने उन भजनों को अपने ऊपर

ढाला है, मुझे अपने गुरु से इश्क था, प्यार था मैंने अपने लफ्जों के जरिए अपने गुरु का प्यार–इश्क जाहिर किया है। वह हमें क्या देना चाहता है? जब शिष्य के हाथ गुरु लग जाता है, गुरु अंदर अपना घर बना लेता है तब शिष्य खुद नहीं बोलता उससे गुरु ही बुलवाता है। मैंने एक शब्द में अपना उभार प्रकट किया हैः

*मैंनू दुख आशिकी दा केहा दुख आशकां दा*
*आशकां दे ताई अग्गे आखया पुकार के*
*आशिकी बगैर किस्सा बणदा नहीं आशका दां*
*बोलया जे झूठ तुसी देखना विचार के*
*इश्क चतुर चतुराई नाल रोवंदे ने*
*नहीं तां बैठ जावंदे ने चुप मन मार के*
*सब कोई अपने सुनावे दुख अजायब सिंह*
*किसे नूं नहीं खास दुख कहे संसार दे*

मैं अक्सर कहा करता हूँः

*प्रेमी प्रेमी सारे कहंदे सारे प्रेमी गप्पी*
*प्रेमी लोक समुंद्र टपदे साथो जांदी आड़ न टप्पी*

प्रेमी, प्रेम के परों पर चढ़कर एक सैकिंड से पहले ही सात समुंद्र पार कर जाता है, अपने सेवकों की संभाल करता है। वही प्रेमी है जिसने आँख बंद की तो मालिक के साथ जुड़ गया, आँख खोली तो दुनिया के साथ है। कबीर साहब कहते हैंः

*गुरु बसे बनारसी शिष्य समुंद्र तीर*
*ईक पल विसरे नाही जे गुण होय शरीर*

इस विषय पर कहने के लिए और भी बहुत कुछ है जो कई दिनों तक खत्म नहीं हो सकता लेकिन टाईम हो गया है। मुझे अफसोस है कि बहुत प्रेमियों के सवाल लिखे–लिखाए रह गए फिर टाईम दिया जाएगा।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

# समय का महत्त्व

एक राजा, कभी–कभी रात को भेष बदलकर अपनी प्रजा का हाल–चाल पता किया करता था कि मेरे राज्य में कोई दुखी तो नहीं, मेरे बारे में प्रजा क्या कहती है, मैं किसी को परेशान तो नहीं कर रहा? एक रात वह राजा भेष बदलकर घूम रहा था तो उसे एक साधु मिला। बातचीत करते हुए बहुत रात बीत गई तो राजा ने कहा अब मैं जाता हूँ।

कई गाँवों और शहरों में भट्ठियाँ होती हैं, जिनमें दिन के समय आग जलाई जाती है इसलिए रात के समय भी ये भट्ठियाँ गर्म रहती हैं। उस साधु

ने एक भट्ठी के सहारे अपनी रात बिताई। राजा ने महल में जाकर लजीज खाने खाए और नर्म गद्दों पर आराम से सो गया। उस रात सर्दी बहुत थी, कोहरा पड़ रहा था। सुबह उठकर राजा ने सोचा कि वह साधु तो ठंड से मर गया होगा। राजा ने अपने अहलकारों को भेजकर साधु को बुलवाया।

राजा ने साधु से पूछा, ''आपकी रात कैसी बीती?'' साधु ने कहा, ''कुछ तो आप जैसी बीती और कुछ आपसे भी अच्छी बीती।'' राजा ने हैरान होकर साधु से पूछा, ''मेरे जैसी रात कैसे बीती और मुझसे अच्छी कैसे बीती?'' साधु ने कहा, ''नींद में राजा और गरीब एक जैसे हो जाते हैं क्योंकि हमें होश नहीं रहता कि हम कहाँ सो रहे हैं तो वह रात आप जैसी बीती। जब तक मैं सर्दी के कारण जागता रहा और मैंने अपना समय परमात्मा की भक्ति में लगाया वह आपसे अच्छा बीता।''

हमें **समय के महत्त्व** को समझना चाहिए, समय हमारे जीवन का सबसे कीमती धन है। अगर हम समय की कीमत को जान जाते हैं, हम कुछ भी हासिल कर सकते हैं और हमें अपनी मंजिल तक पहुँचने से कोई भी नहीं रोक सकता। अगर आलस में आकर हम अपना काम कल पर टालेंगे तो हम कुछ भी हासिल नहीं कर सकेंगे बल्कि हमारे पास जो भी है, हम उसे भी खो देंगे।

हमें इंसानी जामा बहुत मुश्किल से मिला है। हमें मन के कहने में आकर अपने समय को बर्बाद नहीं करना चाहिए। समझदार इंसान हमेशा **समय के महत्त्व** को समझता है, वह अपना समय अच्छे काम करने में और परमात्मा की भक्ति में बिताता है। अगर हम समय की कद्र नहीं करेंगे तो समय भी हमारी कद्र नहीं करेगा।

***

RNI No - RAJHIN/2003/9899

अगर कोई आप पर अहसान करे तो उसे भूलना नहीं, अगर कोई पानी पिलाए तो उसे दूध की तरह समझना है। अगर तू किसी का फायदा कर दे तो उसे जुबान पर नहीं लाना और उससे यह आशा नहीं रखनी कि मैंने इसका फायदा किया है, यह भी मेरा फायदा करे। किसी इंसान से आशा रखना सबसे बड़ी गलती है।

**-परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज**